

# डॉ. गैरी येट्स, यिर्मयाह, व्याख्यान 13, यिर्मयाह 8-10, मूर्तिपूजा

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह यिर्मयाह की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. गैरी येट्स हैं। यह मूर्तिपूजा पर सत्र 13, यिर्मयाह 8-10 है।

हमारा आज का सत्र यिर्मयाह 8 से 10 पर केंद्रित होने जा रहा है, और मैंने इस खंड को मूर्ति-पूजा करने वाले लोगों का विनाश, आने वाला विनाश जो भगवान उनके लोगों पर मूर्तियों की पूजा करने के लिए लाने जा रहा है, और उनके इनकार का नाम दिया है। उससे मुंह मोड़ना।

आइए हम खुद को याद दिलाएं कि यिर्मयाह की किताब में हम कहां हैं। और फिर, ये केवल संदेशों का एक यादृच्छिक संग्रह नहीं है। वहाँ एक क्रम है, वहाँ एक प्रगति है।

और यहां तक कि कभी-कभी, जो हमें अराजकता जैसा दिखता है, जैसा कि लुईस स्टुहलमैन हमें याद दिलाते हैं, वहां व्यवस्था है। अध्याय दो, श्लोक एक से अध्याय चार, श्लोक चार में पुस्तक के शुरुआती संदेशों में यिर्मयाह के आरंभ में, याद रखें कि भगवान उसकी बेवफा पत्नी को उसके पास लौटने के लिए बुलाता है। उन्होंने व्यभिचार किया है।

वह उन्हें अध्याय दो में इसके लिए दोषी ठहराता है। लेकिन फिर अध्याय तीन में, अध्याय चार के शुरुआती हिस्सों में, लोगों को वापस लौटने के लिए ये बार-बार कॉल आती हैं। परमेश्वर अभी भी अपने लोगों को उनकी बेवफाई के बावजूद वापस लेने को तैयार है।

फिर अगले भाग में, अध्याय चार के शेष भाग में, अध्याय छह के अंत तक, हमारे पास काव्यात्मक भविष्यवाणियों की एक श्रृंखला है। प्रभु उन्हें सेना, आने वाले आक्रमण, आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी दे रहे हैं जो परमेश्वर उनके विरुद्ध लाने जा रहा है क्योंकि वे लौटने के लिए तैयार नहीं हैं। प्रभु ने उन्हें लौटने का अवसर दिया है, लेकिन यिर्मयाह के संदेश यह स्वीकार कर रहे हैं कि वापसी की संभावना नहीं है।

अध्याय पाँच, श्लोक 22, उस भाग में, उनके विद्रोही हृदयों के बारे में बात करता है। और श्लोक 23 में कहा गया है, मेरे लोगों का हृदय हठीला और विद्रोही है। वे अलग हो गए हैं और चले गए हैं।

वे अपने दिल में यह नहीं कहते कि हमें अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना चाहिए। और इसलिए, अध्याय दो, श्लोक एक से चार, चार में लौटने का अवसर है, लेकिन अध्याय चार से छह में यह स्वीकारोक्ति है कि ऐसा होने की संभावना नहीं है। इसके परिणामस्वरूप, कारण और प्रभाव यह है कि परमेश्वर उनके विरुद्ध न्याय करने जा रहा है।

वह इस दुश्मन सेना को भेजने जा रहा है। अध्याय चार से छह के बाद गद्य में उपदेश दिया गया है, जो मुझे लगता है कि कई मायनों में कविता को एक साथ जोड़ता है, ये विभिन्न छवियां जो

हमारे सामने आती हैं। और वहाँ मंदिर का उपदेश है, जहाँ यिर्मयाह फिर से एक आह्वान के साथ शुरू होता है कि अगर वे अपने तरीके सुधारेंगे, अगर वे अपना व्यवहार बदलेंगे, तो भगवान न्याय भेजने से पीछे हट जाएगा।

पश्चाताप की संभावना है। लेकिन धर्मोपदेश के अंत तक, संदेश का स्वर न्याय की संभावना से बदलकर इस वास्तविकता पर आ गया है कि लोग वापस नहीं आने वाले हैं। और फिर, मुद्दा यह है कि लोगों को दिल की समस्या है।

उन्हें दिल की सर्जरी की ज़रूरत है। वे खुद ऐसा करने को तैयार नहीं हैं। आखिरकार भगवान को उनके लिए ऐसा करना ही होगा।

पद 24 संदेश के अंत में यह कहता है, लेकिन उन्होंने आज्ञा नहीं मानी और न ही अपना कान लगाया, बल्कि अपनी ही युक्तियों और अपने बुरे दिलों की हठधर्मिता में चलते रहे। और वे पीछे की ओर चले गए और आगे नहीं बढ़े। और यही बात इस्राएल और यहूदा के इतिहास की विशेषता रही है।

और जब यिर्मयाह लोगों की सेवा करता है, जब वह वचन का प्रचार करता है, जब वह उन्हें वापस लौटने का अवसर देता है, तो यह बदलने वाला नहीं है। इस संदेश के अंत में प्रभु उससे कहते हैं, इसलिए तुम उनसे ये सभी शब्द बोलोगे, लेकिन वे तुम्हारी बात नहीं सुनेंगे। समस्या संदेश के साथ नहीं थी।

समस्या संदेश की स्पष्टता के साथ नहीं थी। समस्या संदेश की बयानबाजी के साथ नहीं थी। हमने अपने पिछले सत्र में देखा कि कैसे पैगंबर उन्हें बदलने की ज़रूरत के बारे में प्रभावी ढंग से समझाते हैं और वे जो काम करते हैं, वे मंदिर के उपदेश को शक्तिशाली बनाते हैं।

लेकिन उनके पास हृदय की समस्या है जो उनके लिए पश्चाताप करना संभव बनाती है। अध्याय सात के बाद, हम अध्याय आठ से 10 में इस खंड में आगे बढ़ते हैं, जहाँ फिर से, हमारे पास काव्यात्मक भविष्यवाणियों और संदेशों की एक श्रृंखला है जो उस न्याय पर ध्यान केंद्रित करती है जो फिर से आ रहा है क्योंकि लोगों को हृदय की समस्या है और वे वापस लौटने से इनकार करते हैं। वे नरम पड़ने से इनकार करते हैं।

वे अपने पाप से दूर होने से इनकार करते हैं। पैगंबर ने इस मुद्दे को अध्याय आठ की शुरुआत में, श्लोक चार से छह में संबोधित किया है। और इसलिए मुझे लगता है कि हम मूल रूप से यहाँ अध्याय चार से सात में जो चल रहा है, उसकी निरंतरता देख रहे हैं।

चौथे पद में, प्रभु भविष्यद्वक्ता से कहते हैं, तुम उनसे कहो, प्रभु यों कहता है, जब मनुष्य गिरते हैं, तो क्या वे फिर से नहीं उठते? यदि कोई गिरता है, तो स्वाभाविक प्रवृत्ति यह होती है कि वे फिर से खड़े हो जाते हैं। यदि कोई दूर चला जाता है, तो क्या वह वापस नहीं आता? यदि कोई अपने घर से दूर यात्रा पर जाता है, तो सामान्य बात यह है कि यह एक दो-तरफ़ा यात्रा होगी जहाँ वे वापस लौटेंगे। और यहाँ हमारे पास हमारा मुख्य धर्मशास्त्रीय शब्द है, फिर से शुभ, लेकिन इस्राएल और यहूदा प्रभु के पास वापस नहीं लौटते हैं।

पद पाँच, फिर यह लोग निरन्तर पथ से क्यों भटक गए हैं? प्रभु उन्हें शब करने के लिए बुला रहे हैं , लेकिन वे बार-बार शब करते हैं या उससे विमुख हो गए हैं। वे अपने छल पर दृढ़ता से कायम रहते हैं। उन्होंने लौटने से इनकार कर दिया।

मैं ने ध्यान देकर सुना है, परन्तु वे ठीक से नहीं बोले। कोई अपनी दुष्टता से यह कहने से बाज नहीं आता, कि मैं ने क्या किया है? और इसलिए, प्रभु उनसे अपेक्षा कर रहे हैं कि वे अपने पाप से लौट आएं, अपने बुरे तरीकों से दूर हो जाएं। वे ऐसा नहीं करेंगे क्योंकि मुद्दा यह है कि, फिर से, उन्हें हृदय की समस्या है।

अध्याय नौ में, श्लोक 25 और 26 इस हृदय की समस्या को संबोधित करने जा रहा है जो इस्राएल के पास है या यहूदा के पास है जो उन्हें प्रभु की ओर मुड़ने से रोकता है। याद रखें, अध्याय चार में आह्वान था, अपने हृदय का खतना करो। उस चमड़ी की चमड़ी को काट डालो जो तुम्हें पाप दोहराने के लिए प्रेरित कर रही है, ताकि तुम्हारे हृदय में प्रभु के विरुद्ध कठोर बने रहें।

और श्लोक 25 और 26 इस तरह से उनके दिल का वर्णन करते हैं। देखो, दिन आ रहे हैं, यहोवा की वाणी है, जब मैं उन सभी को दण्डित करूँगा जो केवल शरीर से खतना किए हुए हैं, मिस्र, यहूदा, एदोम, अम्मोन के पुत्र, मोआब, और वे सभी जो रेगिस्तान में रहते हैं, जो अपने बालों के कोने काटते हैं क्योंकि ये सभी राष्ट्र खतना रहित हैं। और इसलिए, यहोवा यहूदा को उन सभी खतना रहित राष्ट्रों में शामिल करता है जो उनके आसपास रहते हैं।

शारीरिक खतना करने का उनका अभ्यास उन्हें परमेश्वर की नज़र में विशिष्ट नहीं बनाता। जो चीज़ उन्हें वास्तव में विशिष्ट बनाती है वह यह है कि अगर वे अपने दिल का खतना करते हैं, अगर वे अपने दिलों से उस बुराई को निकाल देते हैं जो उन्हें परमेश्वर की बात सुनने से रोक रही थी, लेकिन यहूदा के दिल में समस्या है। अब, भविष्यवक्ता अध्याय 17, श्लोक एक में इसका वर्णन करने के लिए एक अलग छवि का उपयोग करता है; यह कहता है कि यहूदा का पाप लोहे की कलम और हीरे की नोक से लिखा गया है।

यह उनके हृदय की पटिया और उनकी वेदी के सींगों पर उत्कीर्ण है। इसलिए, भविष्यवक्ता ने लोहे के औजारों में से एक की कल्पना की जिसका उपयोग पत्थर पर लिखने के लिए किया जाता था, जो अक्सर शिलालेखों के कारण किया जाता था। और वह कहता है, जिस तरह से पत्थर पर लिखने के लिए लोहे की लेखनी का उपयोग किया जाता है, उसी तरह इस्राएल का पाप उनके हृदय पर गहराई से अंकित है।

यहूदा का पाप उनके चरित्र में गहराई से समाया हुआ है। और इसलिए, वे इससे मुँह नहीं मोड़ पाते। उन्हें दिल की बीमारी है।

और फिर, भविष्यवक्ता हमें मानव हृदय का यह वर्णन देता है। हृदय सभी चीजों से अधिक धोखेबाज है और बुरी तरह बीमार है। कौन समझ सकता है, आप जानते हैं, यह वास्तव में कितना दुष्ट है? इसलिए, अध्याय दो से 10 में एक समस्या है जो पूरी किताब में अपना काम करने जा रही है।

भगवान लोगों को वापस अपने पास आने के लिए बुला रहे हैं। लेकिन वे ऐसा करने से मना कर देते हैं। और समस्या यह है कि उन्हें दिल की बीमारी है।

अध्याय सात के बिंदु पर आते हुए, जहाँ प्रभु कहते हैं कि उनका पाप उनके हृदय में गहराई से अंकित है। यही उनका चरित्र है। वे मुड़ नहीं सकते।

तो, यिर्मयाह में वादा यह है कि अंततः, परमेश्वर को जो करना है वह इस्राएल के लोगों की हृदय शल्य चिकित्सा करना है। और जब हम इस पर अपने व्याख्यानों के दूसरे भाग में यिर्मयाह की पुस्तक में नई वाचा का अध्ययन करते हैं, तो हम अध्याय 24, श्लोक सात, अध्याय 29, श्लोक 11 से 14 में अनुच्छेदों की एक श्रृंखला को देखने जा रहे हैं। अध्याय 31 से 33 में नई वाचा का वादा। और फिर उसके बाद, अध्याय 32, श्लोक 39 से 41 में एक आवर्ती, दोहराया गया वादा, कि परमेश्वर पुनर्स्थापना में इसराइल के लिए क्या करने जा रहा है।

जब परमेश्वर इस नई वाचा को स्थापित करेगा, तो वह जो करने जा रहा है वह यह है कि वह इस्राएल को एक नया हृदय देगा। अध्याय 31, श्लोक 33 कहता है, प्रभु लोगों के हृदय पर अपना टोरा लिखने जा रहे हैं ताकि उनमें उनकी ओर मुड़ने और उस तरह का जीवन जीने की आंतरिक इच्छा, क्षमता, सक्षमता और दिव्य शक्ति हो जो वह चाहते हैं। उन्हें जीने के लिए। इस बिंदु पर, जो कुछ उनके दिलों पर अंकित है, जो उनके दिलों पर लिखा है, वह उनका गहरा पाप और भगवान के प्रति उनका विद्रोह है।

परमेश्वर उसे मिटाने जा रहा है, और नई वाचा एक सक्षमता प्रदान करने जा रही है; अध्याय 32 कहता है कि जहां वे सक्षम होंगे, वे भगवान का पालन करने में सक्षम होंगे। वे उससे डरेंगे। वे उसकी आज्ञाओं का पालन करेंगे।

तो, यिर्मयाह की किताब की रणनीति और कथानक का एक हिस्सा, किताब के शुरुआती हिस्सों में, हम इसराइल के पाप को देखते हैं। हम उनका भ्रष्ट हृदय देखते हैं। हम उनके पाप को देखते हैं जो लिखित है और उनके चरित्र में गहराई से अंकित है।

परमेश्वर अपने न्याय के कार्य में, सबसे पहले, उस पाप को दूर करने जा रहा है। और फिर जैसे ही वह लोगों को पुनर्स्थापित करता है, परमेश्वर उन्हें एक नया हृदय देने जा रहा है। वह उद्धार का कार्य करके उन्हें अंदर से बाहर तक बदलने जा रहा है जो कि अतीत में भगवान ने उनके लिए जो किया है उससे भी बड़ा है।

तो, यिर्मयाह की पुस्तक हृदय की समस्या के बारे में है और कैसे परमेश्वर इसे ठीक करने जा रहा है और इसका उपाय करेगा। यह उन प्रमुख विषयों में से एक है जो पूरी पुस्तक में काम करता है। अब, यहूदा के हृदय में ऐसा क्या था जिसने उन्हें प्रभु की ओर मुड़ने के लिए इतना अनिच्छुक बना दिया? और मुझे लगता है कि हम अध्याय आठ से 10 में जो देखते हैं वह यह है कि जिस चीज़ ने उनके हृदय को इतना विद्रोही बना दिया है वह यह है कि उन्होंने अपने हृदय का खतना नहीं किया है क्योंकि उनके हृदय मूर्तियों की पूजा के लिए समर्पित हैं।

उनके पास मूर्ति-पूजक हृदय हैं। और मैंने इस उद्धरण का कई बार इस्तेमाल किया है, लेकिन कैल्विन हमें याद दिलाता है कि हमारे हृदय मूर्ति-निर्माण कारखाने हैं। यिर्मयाह की पुस्तक में इस्राएल और यहूदा के हृदय के साथ वास्तव में यही समस्या है।

हम अध्याय नौ, श्लोक 14 में कठोर हृदय और मूर्तिपूजा के बीच विशिष्ट संबंध देखते हैं। अध्याय नौ, श्लोक 14 में यह कहा गया है, उन्होंने हठपूर्वक अपने दिलों का अनुसरण किया है और बाल देवताओं के पीछे चले गए हैं, जैसा कि उनके पूर्वजों ने उन्हें सिखाया था। ठीक है।

यह इस्राएल और यहूदा के लोगों के इतिहास की विशेषता है। उन्होंने अपने बुरे दिलों का अनुसरण किया है क्योंकि उनमें राष्ट्रों के देवताओं की पूजा करने, उनका अनुसरण करने और उनकी सेवा करने की इच्छा है। याद रखें कि प्रभु ने इस्राएल को अपने मिशनरी लोगों के रूप में स्थापित किया था।

चूँकि वे अपने आस-पास की बुतपरस्त संस्कृतियों के बीच में रहते थे, और प्रभु कई तरीकों से, उन्हें सीरिया, फिलिस्तीन में, दो अलग-अलग प्रमुख भूमि क्षेत्रों के बीच इस स्थान पर रखकर, प्रभु उन्हें मुख्य सड़क पर स्थापित कर रहे थे। इन राष्ट्रों के लिए एक गवाह. उन्हें इन राष्ट्रों को यह दिखाना था कि कानून का पालन करके और फिर भगवान के आशीर्वाद का अनुभव करके सच्चा भगवान कैसा दिखता है। व्यवस्थाविवरण की पुस्तक कहती है कि उनके आस-पास के लोग कहेंगे, इस्राएल के पास किस प्रकार का ईश्वर है जो उन्हें इस प्रकार के महान और गौरवशाली कानून देगा? किस तरह के लोगों के पास भगवान है जो उनसे इस तरह से बात करता है? किस तरह के लोगों के पास ईश्वर है जो उन्हें उन सभी चीजों से आशीर्वाद देता है जो वादा किए गए देश में और दूध और शहद की इस भूमि में हैं? हम इस ईश्वर को जानना चाहते हैं।

इसलिए, यह योजना बनाई गई थी कि जैसे-जैसे इस्राएल इन बुतपरस्त लोगों के बीच में स्ट्रीट पर रहता था, वे इस्राएल में आते, परमेश्वर के बारे में सीखते, उसका अनुसरण करते, उससे प्रेम करते और उसकी सेवा करना चाहते। जो हुआ वह यह है कि पुराने नियम का इतिहास मुख्य रूप से इसके विपरीत है। इस्राएल राष्ट्रों के तौर-तरीके सीखता है।

वे उन देवताओं के बारे में सीखते हैं जिनका राष्ट्र अनुसरण करते हैं, और वे जीवित जल के फव्वारे से दूर हो जाते हैं, और वे टूटे हुए कुंडों में अपना जीवन देते हैं। उनके पास बेकार की पूजा करने वाले दिल हैं। अध्याय 8 से 10 में चेतावनी, जैसा कि अध्याय 4 से 6 में है, जैसा कि मंदिर के उपदेश में अध्याय 7 में है, यह है कि इसके परिणामस्वरूप, भगवान एक दुश्मन सेना लाने वाले हैं।

और यह शत्रु सेना जो भूमि पर आक्रमण करने जा रही है, यह वाचा का अभिशाप होने जा रहा है जिसे परमेश्वर उनकी मूर्तियों की पूजा के लिए इस्राएल पर लाने जा रहा है। और यह निर्णय होने जा रहा है जो इसका सीधा परिणाम है। जैसे अध्याय 4 से 6 में, एक कारण और प्रभाव है। अपने पापों से फिरने और परमेश्वर की ओर लौटने की उनकी निरंतर इच्छा या अनिच्छा शत्रु सेना का वाचा अभिशाप लाने वाली है।

अध्याय 7 की तरह, यदि आप नरम पड़ें तो मैं आपको इस स्थान पर रहने की अनुमति दूँगा। यदि तुम अपने पाप से न फिरो, यदि तुम पश्चाताप न करो, तो मैं यरूशलेम के साथ वैसा ही करने जा रहा हूँ जैसा मैंने शीलो के साथ किया था। और इसलिए अध्याय 8 से 10 में उस न्याय के बारे में और भी चेतावनियाँ हैं जो परमेश्वर उनके मूर्तिपूजक हृदयों के कारण लाने जा रहा है।

हमारे पास भविष्यवक्ता का एक और वर्णन है जो हमें आने वाले आक्रमण, घेराबंदी और उसकी भयावहता तथा यहूदा के अनुभव के बारे में बताता है। यदि वे देख सकते हैं कि यह कितना बुरा होने वाला है, तो शायद वे अपने तरीके बदलने के लिए प्रेरित होंगे। इसलिए भविष्यवक्ता ने दुश्मन के आने के बाद और सेना द्वारा भूमि पर आक्रमण करने के बाद लोगों का वर्णन किया है।

और यहाँ अध्याय 8, श्लोक 14 से 17 में इसका चित्रण है। लोग यह कहते हैं, और वे अभी-अभी युद्ध की भयावहता से गुज़रे हैं। हम चुप क्यों बैठे हैं? एक साथ इकट्ठा हो जाओ। चलो हम किलेबंद शहरों में चले जाएँ और वहाँ नाश हो जाएँ।

हमारे पास वास्तव में कोई विकल्प नहीं है। चलो बस नाश हो जाएँ। क्योंकि प्रभु, हमारे परमेश्वर ने हमें नाश होने के लिए अभिशप्त किया है और हमें ज़हरीला पानी पिलाया है क्योंकि हमने प्रभु के विरुद्ध पाप किया है।

हमने शांति की आशा की, लेकिन कोई भलाई नहीं हुई। उपचार के समय की आशा की, लेकिन देखो हमने जो कुछ अनुभव किया है वह आतंक है। और फिर यिर्मयाह ने उनके लिए यह चित्रित किया कि यह कैसा होने जा रहा है जब यह सेना उनके देश से होकर आ रही है।

उनके घोड़ों की हिनहिनाहट की आवाज़ देश के उत्तरी भाग में दान से आती है। उनके घोड़ों की हिनहिनाहट की आवाज़ से, पूरी ज़मीन काँप उठती है। यह हिल रही है। वे आते हैं और ज़मीन और उसमें जो कुछ भी है, शहर और उसमें रहने वाले सभी लोगों को खा जाते हैं।

क्योंकि देखो, मैं तुम्हारे बीच में ऐसे साँप भेज रहा हूँ, जो जादू से नहीं वश में किए जा सकते, और वे तुम्हें डसेंगे, यहोवा की यही वाणी है। तो, ऐसा लगता है मानो परमेश्वर पूरे देश में ज़हरीले साँप छोड़ने जा रहा है। और फिर, यह सब इस तथ्य के कारण है कि यहूदा को वापस लौटने के लिए ये आह्वान किए गए हैं, लेकिन वे नहीं लौट सकते और वे नहीं लौटेंगे क्योंकि उनके हठीले दिल मूर्तिपूजा के लिए समर्पित हैं।

ठीक है। वहाँ एक, दुश्मन के आक्रमण की घेराबंदी की एक और तस्वीर है जो सज़ा यहूदा को मिलने वाली है, इस विद्रोह के कारण। और हम इसे अध्याय नौ, श्लोक 21 से 22 में देखते हैं।

और उस चित्रण को सुनें जो भविष्यवक्ता हमें यहाँ देता है। वह कहते हैं कि मौत हमारी खिड़कियों में आ गई है। यह हमारे महलों में प्रवेश कर गया है, बच्चों को सड़कों से और युवाओं को चौराहों से काट रहा है।

बोलो, प्रभु की यही वाणी है। मनुष्यों की लोथें खुले मैदान में गोबर की नाई, और काटने वाले के पीछे के पुलों की नाई पड़ी रहेंगी, और कोई उन्हें बटोर न सकेगा। तो, इस परिच्छेद में, यह सिर्फ एक सेना नहीं है जो उनकी भूमि पर आक्रमण कर रही है।

जिस तरह से हम मौत को एक भयानक देवता के रूप में चित्रित करते हैं और उसका मानवीकरण करते हैं, उसी तरह उन्होंने मौत को भी एक देवता के रूप में मानवीकृत किया है। कनानी धर्म में, मोट मृत्यु का देवता था। और ऐसा लगता है, मानो मोट उस दुश्मन से लड़ रहा है जो भूमि पर आक्रमण कर रहा है।

मौत खिड़कियों में घुस रही है। यह उनके बच्चों की जान ले रही है। आप इससे बच नहीं सकते।

यह महलों में भी चढ़ रहा है और राजा के बेटों को ले जा रहा है। और पूरे देश में गोबर की तरह लाशें बिखरी हुई होंगी। ठीक है, अब हम सोचते हैं कि अगर, अगर यह न्याय का वर्णन था जो पैगंबर ने हमें दिया था, तो निश्चित रूप से, जाहिर है, यह हमें बदल देगा।

इससे हमें पश्चाताप होगा। निश्चित रूप से लोगों ने जो कुछ भी सुना होगा, उससे उन्हें यह विश्वास हो गया होगा कि उन्हें अपने तौर-तरीके बदलने की ज़रूरत है। लेकिन यह हमें उनके दिल की समस्या की गहराई को दर्शाता है।

वे मूर्तियों के प्रति बहुत समर्पित हैं। वे अपने पापपूर्ण तरीकों के प्रति इतने समर्पित हैं कि इस प्रकार की चेतावनियाँ भी उन्हें उन पापपूर्ण पैटर्न से दूर नहीं कर सकती हैं जो उनके पिछले जीवन को दर्शाती हैं। अब हमारे पास ऐतिहासिक किताबों में 2 किंग्स अध्याय छह में एक अंश है जो मुझे लगता है कि हमें याद दिलाता है और हमारे लिए चित्रित करता है कि घेराबंदी वास्तव में कितनी भयानक हो सकती है।

और जब यह शत्रु सेना होगी तो यहूदा के लिए परिस्थितियाँ कितनी भयानक होने वाली हैं। 2 राजाओं के अध्याय छह में, हमारे पास अरामियों, उनके शत्रुओं द्वारा इसराइल के उत्तरी राज्य की राजधानी सामरिया की घेराबंदी की कहानी है। और बेन-हदद अपनी सेना लाता है और उन्होंने मूल रूप से सामरिया शहर को बंद कर दिया है।

और इससे क्या होगा कि इसका मतलब यह होगा कि आपकी खाद्य आपूर्ति और आपकी पानी की आपूर्ति अंततः काट दी जाएगी। जैसे-जैसे दिन और महीने बढ़ते हैं, अंततः, आपके पास भोजन खत्म हो जाता है, आपका पानी खत्म हो जाता है, और आपको बस आत्मसमर्पण करना पड़ता है या नष्ट हो जाना पड़ता है। और 2 राजा 6 में अकाल इतना गंभीर है कि यह कहता है कि एक गधे का सिर 80 शेकेल चाँदी में बिक रहा है, जो औसत श्रमिक के लिए सात या आठ साल की मजदूरी के बराबर है।

एक चौथाई लीटर कबूतर का गोबर इतना मूल्यवान है कि इसकी कीमत छह महीने की मजदूरी और पाँच शेकेल चाँदी होगी। उस परिच्छेद में दो महिलाओं की कहानी भी है जहाँ वे अपने बच्चों को मारकर खाने के लिए सहमत हो गई हैं। उनमें से एक महिला ने ऐसा किया है, और दूसरी ने अपने बच्चे को छुपाया है, और वे उस बारे में अपना विवाद लेकर राजा के पास आई हैं।

ठीक है। घेराबंदी इतनी गंभीर हो सकती है। यही यिर्मयाह ने कहा था, ऐसी परिस्थितियाँ जहाँ भुखमरी और अकाल और पानी की कमी और नरभक्षण और भयंकर पीड़ा होगी और फिर दुश्मन द्वारा शहर पर कब्ज़ा करने पर मौत भी होगी।

ये ऐसी ही बातें हैं जिनके बारे में यिर्मयाह भविष्यवाणी कर रहा है। जैसा कि हम यिर्मयाह अध्याय 39, यिर्मयाह अध्याय 52 में यरूशलेम शहर पर कब्ज़ा करने की कहानी को पढ़ते हैं, ठीक यही वह है जो यरूशलेम अपने अंतिम दिनों में अनुभव करने जा रहा है। लेकिन जैसा कि भविष्यवक्ता उन्हें चेतावनी दे रहा है, वे उन प्रकार की चेतावनियों का भी जवाब नहीं दे सकते।

यहाँ तक कि यह वास्तव में उनके पापी दिलों पर काबू पाने के लिए पर्याप्त नहीं है क्योंकि वे मूर्तिपूजा के प्रति समर्पित हैं। अब मुझे लगता है कि हमें इस बात का अंदाज़ा हो गया है कि किस तरह की प्रतिक्रिया, किस तरह की प्रतिक्रिया ईश्वर अपने लोगों से चाह रहा था क्योंकि भविष्यवक्ता उन्हें उस फैसले के बारे में चेतावनी दे रहा है जो जोएल की किताब के छोटे भविष्यवक्ताओं में से एक से आने वाला है। और मैं जोएल के संदेश पर लोगों की प्रतिक्रिया और यिर्मयाह के उपदेश पर यहूदा के लोगों की प्रतिक्रिया की तुलना करने के लिए जोएल अध्याय दो में बस एक या दो मिनट देखना चाहूंगा।

जोएल की किताब की तारीख को लेकर कुछ विवाद या विवाद है। हालाँकि सबसे संभावित सेटिंग निर्वासन के बाद की अवधि प्रतीत होती है। और आश्चर्यजनक रूप से, निर्वासन और यहूदा के सभी न्याय के बाद भी, वे वास्तव में भगवान के पास नहीं लौटे हैं।

वे वापस ज़मीन पर आ गए हैं, लेकिन भूगोल में बदलाव ने उनके दिलों को वास्तव में नहीं बदला है। इसलिए, जब वे वापस ज़मीन पर आए तो उन्हें ज़्यादा न्याय और ज़्यादा वाचा के अभिशापों का सामना करना पड़ा। और जोएल लिखते हैं कि समय बीतने के बाद, एक टिड्डी दल ने ज़मीन से गुज़रकर उनकी फ़सलों को तबाह कर दिया।

और जोएल कहते हैं, हाँ, यह सिर्फ़ प्रकृति की दुर्घटना नहीं थी। यह ईश्वर का निर्णय था। और वह यह भी कहते हैं कि टिड्डियों का आक्रमण इस बात की चेतावनी है कि ईश्वर इस भूमि पर एक और दुश्मन आक्रमण भेजने वाला है।

और इस बार, यह टिड्डियाँ नहीं होंगी; यह एक दुश्मन सेना होगी। और इसलिए, वह निर्वासन के बाद के समय में लोगों को उसी तरह के न्याय, उसी तरह की घेराबंदी की धमकी दे रहा है, जिसकी चेतावनी यिर्मयाह यरूशलेम के पतन से पहले के दिनों में लोगों को दे रहा था। अंतर यह है कि जब जोएल इस संदेश का प्रचार करता है, तो लोग उसी तरह प्रतिक्रिया करते हैं जिस तरह से परमेश्वर ने यिर्मयाह के दिनों में लोगों के लिए प्रतिक्रिया करने के लिए डिज़ाइन किया था।

इसलिए, जोएल में भविष्यवक्ता यह कहता है, फिर भी अब भी प्रभु की घोषणा करता है, अपने पूरे दिल से मेरे पास लौट आओ, उपवास के साथ, रोने के साथ, विलाप के साथ, और अपने दिल और अपने कपड़े फाड़कर, अपने परमेश्वर यहोवा के पास लौट आओ। इसलिए, जोएल बिल्कुल



वही बात कह रहा है जो यिर्मयाह कहता है, परमेश्वर की ओर मुड़ो, लौट आओ, शब । यदि आप अपने जीवन में यू-टर्न लेंगे, तो यही प्रभु की इच्छा है।

केवल उपवास के अनुष्ठान करना, अपने कपड़े फाड़ना, या प्रार्थना सभा में भाग लेना ही पर्याप्त नहीं है। अपने हृदय को फाड़ डालो, अपने हृदय का खतना करो, और सचमुच परमेश्वर के पास वापस आओ। आपका उपवास, रोना और शोक आपके पाप पर आपके सच्चे पश्चाताप का प्रतिबिंब बनें।

जोएल का कहना है कि यही कारण है। क्योंकि प्रभु दयालु और दयालु है, क्रोध करने में धीमा और अटल प्रेम से भरपूर है, और विपत्ति पर भी प्रसन्न होता है। वास्तव में, भगवान, जब लोग फैसले की उसकी चेतावनियों का जवाब देते हैं, तो वह अपना मन बदल देता है और फैसला नहीं भेज सकता है।

और यिर्मयाह अपने समय में भी लोगों को वह वैध अवसर प्रदान कर रहा है। यदि आप प्रभु की ओर मुड़ेंगे तो आप इस फैसले और इस आक्रमण से बच सकते हैं। श्लोक 14, कौन जानता है? कौन जानता है कि यहोवा न फिरेगा और न पछताएगा, और अपने पीछे आशीष, अर्थात् अन्नबलि, और अर्घ, तेरे परमेश्वर यहोवा के लिथे न छोड़ेगा।

कौन जानता है? यदि आप ईश्वर की ओर लौटते हैं, तो इस बात की संभावना हमेशा बनी रहती है कि ईश्वर नरम पड़ जाएं और आपको भोजन और पेय से उसी तरह आशीर्वाद दें, जैसे उसने टिड्डियों को भगाने के लिए इस्तेमाल किया था। और फिर वह यह कहता है: सिय्योन में तुरही बजाओ, उपवास का पवित्रीकरण करो, एक गंभीर सभा बुलाओ, लोगों को इकट्ठा करो, मंडली को पवित्र करो, बुजुर्गों को इकट्ठा करो, बच्चों को इकट्ठा करो, यहां तक कि दूध पिलाते शिशुओं को भी इकट्ठा करो, दूल्हे को अपने कमरे से जाने दो, और दुल्हन उसके कक्ष. अरे, आइए हम सब एक साथ आएँ, सभी को लाएं, बच्चों को लाएं, किसी को उनके हनीमून पर लाएं।

आइए हम सब एक साथ इकट्ठा हों. आइए प्रभु की ओर वापस मुड़ें। हो सकता है कि ईश्वर नरम पड़ जाए और यह फैसला न सुनाए।

और जब हम जोएल अध्याय 2 में श्लोक 17 के अंत पर रुकते हैं, तो पश्चाताप करने का आह्वान होता है। इसके बाद के श्लोकों में हमें यह विचार मिलता है कि लोगों ने इस आह्वान का उत्तर दिया है। उन्होंने सभा की घोषणा कर दी है.

उन्होंने उपवास किया है. उन्होंने अपने वस्त्र फाड़ दिये हैं। वे प्रभु के पास लौट आये हैं क्योंकि हमने श्लोक 18 में यही पढ़ा है।

तब यहोवा को अपने देश से ईर्ष्या हुई और उसे अपनी प्रजा पर दया आई। यहोवा ने अपनी प्रजा से कहा, सुनो, मैं तुम्हारे पास अन्न, दाखमधु, और तेल भेजता हूं, और तुम तृप्त हो जाओगे, और मैं फिर तुम्हें अन्यजातियों के बीच में बदनाम न होने दूंगा। मैं उत्तरवाले को तुम से दूर कर दूंगा, और उसे सूखी और सुनसान भूमि में ले जाऊंगा, और उसके अग्ररक्षक को पूर्वी समुद्र में और पीछे वाले को पश्चिमी समुद्र में ले जाऊंगा।

उसकी दुर्गन्ध और दुर्गन्ध बढ़ेगी, क्योंकि उस ने बड़े बड़े काम किए हैं। अरे, प्रभु न्याय को बीच में ही रोक देता है, शत्रु सेना को दूर कर देता है और यहूदा के लोगों से वादा करता है, मैं न्याय के बजाय आशीर्वाद भेजने जा रहा हूँ। वह बाद में आगे बढ़ता है, और वह पद 24 में कहता है, खलिहान अनाज से भर जाएगा, और कुंड शराब और तेल से भर जाएंगे।

मैं तुम्हें वे वर्ष लौटा दूँगा जो टिड्डियों ने खा लिये हैं। इसलिए, ईश्वर न केवल निर्णय भेजने से पीछे हट जाता है, बल्कि वह पहले ही आ चुके निर्णय के प्रभाव को भी छीन लेता है। इस सामने आने वाले फैसले के बीच में, भगवान रुक जाता है और इसे भेजने से कतराता है।

प्रभु यिर्मयाह में जो करना चाहते हैं वह बिल्कुल वही बात है। यदि लोग किसी तरह उसे जवाब देंगे, और यिर्मयाह अध्याय 5 श्लोक 8 में, इसे सुनें और देखें कि क्या यह बिल्कुल वैसा नहीं लगता जैसा भगवान लोगों से जोएल के दिन में करने के लिए कह रहे थे। अध्याय 5 में, मुझे क्षमा करें, अध्याय 4, श्लोक 8 में कहा गया है, टाट पहनो, विलाप करो और विलाप करो क्योंकि प्रभु का भड़का हुआ क्रोध हम पर से वापस नहीं आया है।

तो, जोएल के दिनों में, हमारे पास एक उदाहरण है कि कैसे एक भविष्यवक्ता ने आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी दी थी। उसने लोगों से विलाप करने, दुःखी होने, अपने पापों से दूर होने, अपने दिलों को चीरने के लिए कहा, न कि केवल अनुष्ठानों को पूरा करने के लिए, और उस उभरते न्याय के बीच में, जब टिड्डे पहले ही आ चुके थे, जब सेना अपने हथियारों को तेज कर रही थी और युद्ध में जाने के लिए तैयार हो रही थी, जब लोग परमेश्वर की ओर मुड़े, तो परमेश्वर ने न्याय भेजने से मना कर दिया। यिर्मयाह अध्याय 8 से 10 में, प्रभु उसी तरह की पुकार दे रहा है; वह उसी तरह का अवसर प्रदान कर रहा है, और वह उन्हें आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी दे रहा है, लेकिन समस्या यह है कि यहूदा के दिल में समस्या है।

उनका हृदय मूर्तियों के प्रति समर्पित है, और इस कारण वे अपने पाप से दूर नहीं हो पाते, इसलिए परमेश्वर न्याय भेजने जा रहा है। परमेश्वर इन मूर्तिपूजक लोगों को नष्ट करने जा रहा है। हमने अध्याय 9 की आयत 14 में देखा कि मूर्तिपूजा ही समस्या और मुद्दा है जो यहूदा को परमेश्वर की ओर मुड़ने से रोक रहा है, और इसलिए अध्याय 10 में जो कुछ है वह एक ऐसा अंश है जो मूर्तिपूजा की निरर्थकता पर ध्यान केंद्रित करने जा रहा है।

इस अनुच्छेद में सीधे उस मुद्दे को संबोधित किया गया है जो यहूदा को परमेश्वर की ओर लौटने और वह लोग बनने से रोक रहा है जो वह उन्हें बनाना चाहता है। इसलिए, अध्याय 10 की आयत एक से पांच में, भविष्यवक्ता हमें मूर्तिपूजा की निरर्थकता की याद दिलाता है। और यहाँ बताया गया है कि वह इसका वर्णन कैसे करता है।

श्लोक तीन में, वह कहते हैं कि लोगों के रीति-रिवाज और बुतपरस्त प्रथाएँ व्यर्थ हैं; वे स्तरीय हैं, और यह उन शब्दों में से एक है जिसका उपयोग पुराने नियम में मूर्तियों का वर्णन करने के लिए किया जाता है। वे सिर्फ हवा हैं, वे आपकी मदद नहीं करेंगे, वे सिर्फ वाष्प हैं। जंगल से एक पेड़ काटा जाता है और एक कारीगर के हाथ से उस पर कुल्हाड़ी चलायी जाती है।

वे उसे चाँदी और सोने से सजाते हैं, वे उसे हथौड़े और कीलों से कसते हैं ताकि वह हिल न सके। उनकी मूर्तियाँ खीरे के खेत में बिजूकों की तरह हैं। वे बोल नहीं सकते, उन्हें उठाना पड़ता है, वे चल नहीं सकते।

उन से मत डरो, क्योंकि वे न तो बुराई कर सकते हैं, और न भलाई कर सकते हैं। मूर्तियाँ आपकी मदद नहीं कर सकतीं। अब, यहाँ भविष्यवक्ता, एक अर्थ में, कुछ कटु व्यंग्य में उलझा हुआ है।

प्राचीन निकट पूर्व में मूर्तिपूजक इतने परिष्कृत थे कि यह समझ पाते थे कि मूर्ति ही उनका भगवान नहीं है। भगवान और उसका प्रतिनिधित्व करने वाली मूर्ति के बीच अंतर था। लेकिन एक बहुत ही वास्तविक एहसास था कि उनके देवताओं की उपस्थिति छवि के साथ ही जुड़ी हुई थी।

एक अभिषेक समारोह था जिसे मूर्ति का मुंह खोलना या मुंह धोना कहा जाता था, जहाँ, एक अर्थ में, वह छवि भगवान को समर्पित हो गई, और भगवान की उपस्थिति मूर्ति के साथ ही जुड़ गई। लेकिन तथ्य यह है कि इस ईश्वर को एक निर्जीव वस्तु द्वारा दर्शाया जाता है, मेरा मतलब है कि मूर्ति पूजक को छवि बनानी होगी। यिर्मयाह को, यह उसे उन देवताओं पर भरोसा करने की निरर्थकता की याद दिलाता है जिनका ये मूर्तियाँ प्रतिनिधित्व करती हैं।

भविष्यवक्ता यशायाह यशायाह 44 और 47 में इसी तरह का व्यंग्य करते हैं, जहाँ वे मूर्तिपूजा की निरर्थकता के बारे में बात करते हैं। वे कहते हैं, कल्पना कीजिए: एक आदमी पेड़ से एक लट्टा काटता है, उसका आधा हिस्सा आग में जलाकर अपना खाना पकाता है, और बाकी आधे हिस्से से मूर्ति बनाता है। यह मूर्तिपूजा की निरर्थकता को दर्शाता है।

और यिर्मयाह कहता है, उन सभी चीजों के बारे में सोचो जो एक मूर्ति नहीं कर सकती। यह बोल नहीं सकती, यह चल नहीं सकती। वास्तव में, उन्हें यह सुनिश्चित करने के लिए इसे एक कुरसी पर कील से ठोकना पड़ता है कि यह गिर न जाए।

बुराई नहीं कर सकते, वे अच्छाई नहीं कर सकते। कोई भी ऐसे भगवान की पूजा क्यों करना चाहेगा जिसका प्रतिनिधित्व इस तरह से किया जाता है? अब, पुराने नियम में ऐसे स्थान हैं जहाँ मेरा मानना है कि बाइबल यह स्वीकार करने जा रही है कि आध्यात्मिक शक्तियाँ हैं और मूर्तियों से जुड़े आध्यात्मिक प्राणी हैं। लेकिन यहाँ, विचार बस इतना है कि वे बिल्कुल भी कुछ नहीं हैं।

भले ही इन मूर्तियों द्वारा प्रतिनिधित्व की जाने वाली आध्यात्मिक शक्तियाँ हों, भगवान की तुलना में, जो शाश्वत निर्माता, स्वयं-विद्यमान ईश्वर हैं, ये मूर्तियाँ और उनके द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए देवता कुछ भी नहीं हैं। अगले भाग में, अध्याय 6 से 10, या मुझे क्षमा करें, अध्याय 10 में श्लोक 6 से 10, केवल भगवान ही ईश्वर हैं। श्लोक 6 से 10: हे भगवान, आपके जैसा कोई नहीं है।

आप महान हैं। पराक्रम में आपका नाम महान है। हे राष्ट्रों के राजा, तुझ से कौन नहीं डरेगा? क्योंकि यह तुम्हारा हक है, क्योंकि राष्ट्रों के सभी बुद्धिमानों के बीच, और उनके सभी राज्यों में, तुम्हारे जैसा कोई नहीं है।

वे मूर्ख और मूर्ख दोनों हैं। मूर्तियों की शिक्षा तो लकड़ी मात्र है। पद 10, परन्तु यहोवा सच्चा परमेश्वर है।

वह जीवित और अनन्त राजा है। उसके क्रोध, भूकंप और राष्ट्र उसके क्रोध को सहन नहीं कर सकते। केवल यहोवा ही पृथ्वी पर प्रभुता करनेवाला प्रभु है।

और भले ही ये मूर्तियाँ देवताओं का प्रतिनिधित्व करती हों, वे प्रभु के समान देवता नहीं हैं। वे शाश्वत नहीं हैं। वे रचनाकार नहीं हैं।

वे स्वयंभू नहीं हैं। उनके पास इतिहास को प्रभु की तरह नियंत्रित करने की संप्रभुता नहीं है, और यही बात यशायाह भी कहता है। वास्तव में, जो वर्णन मूर्तियों पर फिट बैठता है वह यह है कि वे मूर्ख और मूर्ख हैं।

ठीक है। पैगंबर इस उपदेश में आयत 1 से 5 में मूर्तियों के बारे में जो अंतिम बात कहने जा रहे हैं, वह यह है कि मूर्तियाँ व्यर्थ हैं और कुछ भी करने में असमर्थ हैं। श्लोक 6 से 10, भगवान ही भगवान हैं।

केवल प्रभु ही संप्रभु है। वह सच्चा भगवान और एकमात्र है। श्लोक 11 से 15 में इसका प्रमाण यह है कि प्रभु ही सृष्टिकर्ता है।

वह सृष्टिकर्ता ईश्वर है। इज़राइल सृजनात्मक एकेश्वरवाद में विश्वास करता था। प्रभु के समान कोई नहीं था।

इस बात की परवाह किए बिना कि वहाँ अन्य आध्यात्मिक प्राणी और शक्तियाँ क्या हो सकती हैं, केवल भगवान ही स्वयंभू निर्माता हैं। तो, श्लोक 11 से 15 यह कहता है, जिन देवताओं ने आकाश और पृथ्वी को नहीं बनाया, वे पृथ्वी पर से और आकाश के नीचे से नष्ट हो जाएंगे। वही प्रभु है जिस ने अपनी शक्ति से पृथ्वी को बनाया, जिस ने अपनी बुद्धि से जगत को स्थापित किया, और अपनी समझ से आकाश को फैलाया।

ठीक है। केवल प्रभु ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं जिनकी इस्राएल को आराधना करने की आवश्यकता है। एकमात्र ऐसा व्यक्ति जिसे इज़राइल को सम्मान और गौरव देने की ज़रूरत है।

जिस पर इज़राइल को विशेष रूप से भरोसा करने की ज़रूरत है, आप जानते हैं, उनके आशीर्वाद और संरक्षण और सुरक्षा के लिए क्योंकि भगवान अकेले ही निर्माता हैं। अब यहां एक महत्वपूर्ण संबंध है जिसे हमें पुराने नियम में मूर्तिपूजा के धर्मशास्त्र को वास्तव में समझने के लिए श्लोक 11 से 15 में समझने की आवश्यकता है। श्लोक 1 से 5 याद रखें, वे सभी कार्य जो एक मूर्ति नहीं कर सकती।

मूर्ति बोल नहीं सकती, मूर्ति हिल नहीं सकती, मूर्ति अच्छाई नहीं कर सकती और मूर्ति बुराई नहीं कर सकती। यह नपुंसक है। ठीक वैसे ही जैसे एलिय्याह ने माउंट कार्मेल पर बाल के

भविष्यवक्ताओं से कहा था, तुम्हारा भगवान कहाँ है? निश्चित रूप से, वह व्यंग्यात्मक तरीके से वहाँ उत्तर दे सकता है, वह वहाँ नहीं है।

याद रखें कि दूसरे भाग में, मूर्तियों के बारे में जो वर्णन दिया गया है, उसमें केवल प्रभु ही ईश्वर है। मूर्तियाँ मूर्ख और बेवकूफ़ होती हैं। खैर, सुनिए कि श्लोक 14 और 15 में मूर्तिपूजकों के बारे में उन्होंने क्या कहा।

हर एक मनुष्य मूर्ख और ज्ञानहीन है। हर एक सुनार अपनी मूर्तों के कारण लज्जित होता है, क्योंकि उसकी मूर्तें झूठी हैं, और उनमें प्राण नहीं है। वे व्यर्थ हैं, और धोखा देनेवाली वस्तुएँ हैं।

ठीक है, यहाँ यिर्मयाह का धार्मिक पंचलाइन है। मूर्तियाँ मूर्ख और बेवकूफ़ होती हैं। इसलिए, उनकी पूजा करने वाले लोग भी मूर्ख ही होते हैं।

और जी.के. बील ने मूर्तिपूजा और उसके धर्मशास्त्र पर अपनी पुस्तक में इस बात को स्पष्ट किया है। हम वही बन जाते हैं जिसकी हम पूजा करते हैं। और पुराने नियम में जिस तरह से परमेश्वर मूर्तिपूजा का न्याय करता है, वह यह है कि जो लोग इन खोखले, मूर्ख देवताओं की पूजा करते हैं, वे उनके जैसे बन जाते हैं।

निर्गमन अध्याय 32 में, जब इस्राएली झुककर सोने के बछड़े की पूजा करते हैं, तो उनके बारे में जो वर्णन किया गया है, वह कम से कम चार अलग-अलग बार इस प्रकार है कि वे हठी विद्रोही बन गए हैं। और बील हमें याद दिलाता है कि इसका वास्तव में मतलब यह है कि मूसा लोगों का वर्णन करने के लिए जिद्दी गाय की छवि का उपयोग कर रहा है। वे एक सोने के बछड़े की पूजा करते थे।

वे जिद्दी गायों की तरह हो गए। मुझे लगता है कि भजन 115 इस बात को थोड़ा और स्पष्ट रूप से बताता है। हम जिसकी पूजा करते हैं, हम वैसे ही बन जाते हैं।

आयत चार यह कहती है: उनकी मूर्तियाँ चाँदी और सोने की हैं, जो मानव हाथों की बनाई हुई हैं। उनके मुँह तो हैं परन्तु बोलते नहीं, आंखें हैं जो देखती नहीं। उनके कान ऐसे होते हैं जो सुनते नहीं और नाक ऐसी होती है जो सूँघती नहीं।

उनके हाथ तो हैं, लेकिन महसूस नहीं होते। वे महसूस करते हैं, लेकिन चलते नहीं हैं। उनके पैर तो हैं, पर वे चलते नहीं।

और उनके गले से आवाज नहीं निकलती। क्या आपने यिर्मयाह की बिजूका और खरबूजे के टुकड़े की छवि सुनी है? ठीक है, लेकिन यहाँ श्लोक आठ में बात है। जो बनाते हैं वही बनते हैं।

और ऐसा ही वे सभी करें जो उन पर भरोसा करते हैं। और यिर्मयाह बिल्कुल यही कह रहा है। देखो, मैं जानता हूँ कि यह तुम्हारी मूर्तिपूजा है। यह इन अन्य देवताओं के प्रति आपकी भक्ति है।

यही कारण है कि तुम्हारा हृदय जिद्दी है। यही कारण है कि आप ईश्वर की ओर मुड़ने से इनकार करते हैं। परन्तु तुम्हें यह समझने की आवश्यकता है कि इन मूर्तियों की पूजा ने तुम्हें मूर्ख और मूर्ख बना दिया है।

उन्होंने आपको आध्यात्मिक रूप से सुस्त बना दिया है क्योंकि जब आप ऐसे देवताओं की पूजा करते हैं जो देख नहीं सकते, सुन नहीं सकते, बोल नहीं सकते, जान नहीं सकते, सही या गलत नहीं कर सकते, तो आप उनके जैसे बन जाते हैं। और इसलिए, अध्याय आठ से 10 में एक विषय यह है कि इस्राएल मूर्ख बन गया है। यहूदा अपनी भक्ति, अपनी सेवा और इन खोखले देवताओं की पूजा के कारण मूर्ख बन गया है।

और यिर्मयाह इन अध्यायों में लगातार इस बात पर वापस आने वाला है कि इस्राएल में समझ की कमी है। जिस किसी के पास थोड़ी भी बुद्धि होती, वह अपनी मूर्तियों से दूर होने की ज़रूरत को समझ लेता, लेकिन यहूदा के पास ऐसा करने का ज्ञान नहीं है क्योंकि उन्होंने ऐसे देवताओं की पूजा की है जो खुद मूर्ख और मूर्ख हैं। अध्याय आठ, श्लोक सात में यह कहा गया है: यहाँ तक कि आकाश में सारस भी अपने समय को जानता है, और कछुआ कबूतर और सारस में निगल अपने आने का समय जानते हैं।

वे अपने स्वभाव और उन चीजों का पालन करते हैं जो भगवान ने उनमें डाली हैं। उनके पास ऐसा करने की बुद्धि है। भगवान ने इसे अपनी रचना में प्रत्यारोपित किया है, लेकिन मेरे लोग भगवान के नियमों को नहीं जानते हैं।

सचमुच, मूर्तिपूजा करके वे पशुओं से भी अधिक मूर्ख बन गए हैं। वे आकाश के पक्षियों की तरह चतुर नहीं हैं जो जानते हैं कि भगवान की बात कैसे सुननी है। श्लोक आठ, तुम कैसे कह सकते हो कि हम बुद्धिमान हैं, और प्रभु की व्यवस्था हमारे साथ है, परन्तु देखो, शास्त्रियों की झूठी कलम ने उसे झूठ बना दिया है।

और हम नहीं जानते कि यहाँ के शास्त्री वास्तव में पाठ बदल रहे थे या नहीं, लेकिन जिन्हें परमेश्वर के वचन को पढ़ाने की जिम्मेदारी दी गई थी, वे इसका अर्थ बदल रहे थे। वे न्याय के संदेश को कुंद कर रहे थे, केवल आशीर्वाद के संदेश पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे, और इसके परिणामस्वरूप, उनके बुद्धिमान लोग मूर्ख थे। अध्याय नौ, श्लोक 12 से 14, वह व्यक्ति कौन है जो इतना बुद्धिमान है कि वह इसे समझ सकता है? प्रभु के मुख से किससे बात की गई है कि वह इसे घोषित कर सके? भूमि क्यों उजाड़ और जंगल की तरह उजाड़ हो गई है? अरे, बुद्धिमान व्यक्ति को यह समझने में सक्षम होना चाहिए कि हम इतनी कठिनाई से क्यों गुजर रहे हैं, और इसका स्पष्ट उत्तर यह है कि हमने प्रभु की आज्ञा नहीं मानी है, लेकिन क्योंकि हमारा हृदय मूर्तियों के प्रति समर्पित है, इसलिए हम उस स्पष्ट को नहीं देख सकते जो हमें घूरना चाहिए।

अध्याय नौ, श्लोक 23 और 24, बुद्धिमान अपनी बुद्धि पर घमंड न करे। वीर अपनी शक्ति पर घमंड न करे। धनवान अपने धन पर घमंड न करे, परन्तु जो घमंड करे वह इस बात पर घमंड करे कि वह मुझे समझता और जानता है।

आप देखिए, उन्होंने वास्तविक ज्ञान खो दिया है क्योंकि वे सच्चे ईश्वर को नहीं जानते। उन्होंने अच्छाई और बुराई के बीच अंतर समझने की क्षमता खो दी है क्योंकि मूर्तियाँ अच्छाई नहीं कर सकतीं, और वे बुराई नहीं कर सकतीं। उन्होंने यह समझने की क्षमता खो दी है कि ईश्वर यह न्याय क्यों ला रहा है, और उन्होंने यह समझ खो दी है कि हमें ईश्वर की ओर वापस लौटने की आवश्यकता है क्योंकि हमने खुद पर विपत्ति लायी है।

मूर्तिपूजा के कारण ऐसा हुआ है। अध्याय नौ की तीसरी आयत में यह कहा गया है: वे अपनी जीभ को धनुष की तरह झुकाते हैं। देश में झूठ फैला है, सत्य नहीं, क्योंकि वे बुराई से बुराई की ओर बढ़ते हैं, और वे मुझे नहीं जानते, यहोवा की यही वाणी है।

वे वास्तविक ज्ञान के स्रोत से दूर हो गए हैं जो उन्हें अच्छे और बुरे के बीच अंतर समझने में मदद करेगा। अध्याय नौ, श्लोक छह, अत्याचार पर अत्याचार और छल पर छल का अंबार लगाते हुए, वे मुझे जानने से इन्कार करते हैं, प्रभु की यही वाणी है। उन्होंने खुद को ज्ञान के सच्चे स्रोत से अलग कर लिया है।

अब, मैं मूर्तिपूजा की प्रकृति के बारे में बात करने में बस कुछ मिनट बिताना चाहता हूँ और इसे लागू करने और इसे हमारे जीवन में वास्तविक बनाने का प्रयास करना चाहता हूँ। यहूदा में मूर्तिपूजा केवल एक प्रतिस्पर्धी धर्मशास्त्र के बारे में नहीं थी। बात सिर्फ यह नहीं थी कि क्या मैं एकेश्वरवादी बनाम बहुदेववादी हूँ? लेकिन वास्तव में, मूर्तिपूजा में जीवन जीने की एक रणनीति शामिल थी जिसके बारे में भविष्यवक्ता का कहना है कि यह बिल्कुल मूर्खतापूर्ण है।

मुझे लगता है कि प्राचीन इज़राइल में कुछ मायनों में मूर्तिपूजा, जैसा कि यह हमारे जीवन में प्रतिबिंबित होती है, एक ऐसी रणनीति के बारे में है जो उन चीजों को हासिल करने के बारे में है जो हमें लगता है कि हमें जीवन को सार्थक और महत्वपूर्ण बनाने के लिए चाहिए। पूरे पुराने नियम में मूर्तिपूजा का अध्ययन करते समय मैंने देखा कि यह अक्सर उस चीज़ से जुड़ा होता है जिसे कुछ लोग अपवित्र त्रिमूर्ति, पैसा, सेक्स और शक्ति कहते हैं। इस्राएल ने मूर्तियों की पूजा की।

वे तूफान देवता के रूप में बाल की पूजा करते थे क्योंकि उनका मानना था कि इससे उन्हें धन और संपत्ति मिलेगी। होशे अध्याय दो, श्लोक पांच, भगवान उन्हें शराब, अनाज, प्रचुर फसल देता है, और वे घूमते हैं, और वे उसे बाल को वापस दे देते हैं क्योंकि उनका मानना है कि बाल ही वह है जिसने उन्हें दिया है। यिर्मयाह अध्याय 44, श्लोक 16 से 18।

जब हमने स्वर्ग की रानी को अपना प्रसाद चढ़ाया और अपने बुतपरस्त रीति-रिवाजों को पूरा किया तो चीजें हमारे लिए अच्छी चल रही थीं। जब योशियाह ने ये धार्मिक सुधार लाए तो हालात खराब होने लगे। हम पुराने तरीकों पर वापस जा रहे हैं।

मूर्तिपूजा का संबंध सेक्स के अभ्यास और प्राप्ति से था। कनानी प्रजनन देवता उन्हें बच्चों का आशीर्वाद देंगे। यहूदा में, विभाजित राजशाही के समय में, पुरातत्वविदों को यहूदा के लोगों के घरों और घरों के नीचे इन प्रजनन देवी की सैकड़ों मूर्तियाँ मिली हैं।

महिलाएँ इन देवताओं की पूजा करती थीं क्योंकि उनका मानना था कि वे उन्हें बच्चे देंगे। इसके साथ ही, प्रजनन देवताओं की पूजा ने यौन अनैतिकता, वेश्यावृत्ति, और प्रजनन संस्कार को भी पूजा के अभ्यास में ला दिया। जो चीज़ें परमेश्वर ने डिज़ाइन की थीं वे इस्राएल की पूजा का हिस्सा नहीं थीं।

इसने उनके जीवन में सेक्स को लाया, बिना उन नैतिक आदेशों का पालन किए जो ईश्वर ने उन पर थोपे थे। मैं कल्पना कर सकता हूँ कि अगर हम आज अपनी संस्कृति में इस तरह के धर्म को बढ़ावा दें, तो यह आधुनिक संस्कृति का दर्शन भी है। मूर्तिपूजा भी शक्ति प्राप्ति से जुड़ी है।

इस्राएल के राजा इन देवताओं की शक्तियों को अपने अधिकार में लेना चाहते हैं। 2 राजा अध्याय 3 में, हम देखते हैं कि मोआब के राजा ने युद्ध के समय दीवार पर अपने बेटे की बलि चढ़ा दी क्योंकि वह उस देवता से शक्ति चाहता था। यहूदा के राजा, आहाज और मनश्शे ने भी अपने बेटों के साथ ऐसा ही किया क्योंकि वे उन देवताओं से मिलने वाली शक्ति चाहते थे।

आहाज अशशूर के साथ गठबंधन करता है और यरूशलेम में अशशूर की वेदी लाता है क्योंकि इससे उसे वह शक्ति मिलेगी जो अकेले प्रभु के पास नहीं है। अहाब इज़ेबेल से शादी करता है और उसके पिता के साथ गठबंधन करता है, जो बाल का उपासक है क्योंकि टायर का राजा एक शक्तिशाली राजनीतिक व्यक्ति है। इज़ेबेल बाल की पूजा को बढ़ावा देती है क्योंकि यह राजा की शक्ति को बढ़ाने का एक तरीका है।

अगर कोई व्यक्ति राजा के रूप में आपको अपना अंगूर का बाग नहीं बेचना चाहता है, तो आपको इसे लेने का अधिकार है। मूर्तियाँ शक्ति का वादा करती हैं। यिर्मयाह और भविष्यद्वक्ता और स्वयं प्रभु लोगों को जो दिखाना चाहते हैं, यह आपके जीवन जीने का एक मूर्खतापूर्ण तरीका है।

आप इन चीज़ों को प्राप्त करने का प्रयास करेंगे और वे आपके जीवन में एक अपवित्र त्रिमूर्ति बन जाएंगी क्योंकि आप इन देवताओं से नाजायज तरीकों से उन्हें प्रदान करने की आशा कर रहे हैं। वास्तविकता यह है कि अगर हम बाइबल को उस तरह से देखें जैसे भगवान ने हमें मानव के रूप में डिज़ाइन किया है, तो मैं यह नहीं मानता कि पैसा, सेक्स और शक्ति बिल्कुल भी अपवित्र त्रिमूर्ति हैं। उचित रूप से उपयोग किया जाता है और जब ईश्वर उन चीज़ों का स्रोत होता है, तो वे ईश्वर की ओर से उपहार होते हैं।

परमेश्वर ने अपने लोगों को वादा की गई भूमि से आशीर्वाद दिया जो दूध और शहद से बहती थी। भगवान ने उन्हें समृद्धि का आशीर्वाद दिया। भगवान ने विवाह के रिश्ते के भीतर अपने प्रेम की एक सुंदर अभिव्यक्ति के रूप में सेक्स की रचना की।

ईश्वर ने शक्ति का सृजन किया और हमें ईश्वर की छवियाँ बनाई ताकि हम उनके प्रतिनिधि बन सकें और शासन और राज कर सकें। इसलिए, जब हम ईश्वर को इन चीज़ों के स्रोत के रूप में पहचानते हैं, तो इन चीज़ों का इस्तेमाल अच्छे कामों के लिए किया जा सकता है। अगर हम ईश्वर को अपने धन के स्रोत के रूप में पहचानते हैं, तो यह हमें सक्षम बनाता है और हमें अपने धन के साथ उदार होने की अनुमति देता है क्योंकि हमें एहसास होता है कि ईश्वर हमारा ख्याल रखेगा।



अगर हम यह समझ लें कि ईश्वर ही वह है जो हमें सेक्स और उससे मिलने वाले प्यार और आनंद और सुख का आशीर्वाद देता है, तो हम विवाह के संदर्भ में खुद को दूसरे व्यक्ति को दे सकते हैं, और यह निस्वार्थता की एक सुंदर अभिव्यक्ति बन सकती है। अगर ईश्वर को इसके स्रोत के रूप में नहीं पहचाना जाता है, तो सेक्स हमारे अपने सुखों के साथ खुद को भोगने, लोगों का इस्तेमाल करने या अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए जो कुछ भी करना पड़ता है, उसका एक और तरीका है। अगर शक्ति का सही तरीके से इस्तेमाल किया जाए, तो यह समाज को आशीर्वाद दे सकती है और दूसरे लोगों को उनके उपहारों और क्षमताओं का इस्तेमाल करने में मदद कर सकती है।

लेकिन अगर शक्ति ईश्वर से नहीं आती है, तो यह कुछ ऐसी चीज़ बन जाती है जिसका उपयोग हम दमन करने, चोट पहुंचाने और हमारे खिलाफ हिंसा करने के लिए करते हैं। इसलिए, मूर्तिपूजा इन चीज़ों को प्राप्त करने की एक ग़लत रणनीति मात्र नहीं है। उनका उपयोग कैसे किया जाए, इसके बारे में भी यह एक ग़लत रणनीति है।

और इज़राइल में, जैसा कि लोग अपनी मूर्तियों को ऐसी चीज़ों के रूप में देखते हैं जो उन्हें जीवन में सबसे महत्वपूर्ण चीज़ें देंगी, चाहे वह पैसा हो, सेक्स हो, शक्ति हो, या इनमें से कोई अन्य चीज़ हो, हमने जो सीखा है वह यह है कि वे हताश हो जाते हैं और वे इसका उपयोग करते हैं ये चीज़ें ग़लत तरीके से हैं क्योंकि वे कभी नहीं होतीं, जिन देवताओं पर वे भरोसा करते हैं वे कभी भी वे चीज़ें प्रदान करने में सक्षम नहीं होते हैं जिनकी वे वास्तव में तलाश कर रहे हैं। वे धन और समृद्धि देने के लिए बाल की तलाश कर रहे थे। उस गरीबी और दरिद्रता को देखो जिसे यहूदा अनुभव करने वाला है क्योंकि वे इन अन्य देवताओं की पूजा करते हैं।

वे एक राष्ट्र के रूप में पूरी तरह से नष्ट होने जा रहे हैं। वे सेक्स उपलब्ध कराने के लिए देवताओं की ओर देखते हैं। और जब देवताओं ने उन्हें उस तरह से प्रदान नहीं किया जैसा वे चाहते थे या आवश्यकता थी, तो वे हताश हो गए और उन्होंने वास्तव में उसे अपनी पूजा में ले लिया।

जब वे शक्ति, संरक्षण और सुरक्षा लाने के लिए इन मूर्तियों की ओर देख रहे थे, तो उन्हें पता चला कि यह काम नहीं करेगा। और हमें अध्याय आठ, श्लोक एक से तीन में इसका एक बहुत ही ज्वलंत अनुस्मारक दिया गया है। यह हमें वहां याद दिलाता है कि राजाओं और यहूदा के लोगों ने सितारों द्वारा दर्शाए गए देवताओं की पूजा करना शुरू कर दिया था।

और इन सूक्ष्म देवताओं की पूजा हमें वह सुरक्षा और शक्ति दे सकती है जो भगवान प्रदान नहीं कर सकते। और यहाँ प्रभु क्या कहते हैं: क्या वह रणनीति काम आई? यहोवा की यह वाणी है, उस समय यहूदा के राजाओं, उसके हाकिमों, याजकों, भविष्यद्वक्ताओं, और यरूशलेम के निवासियोंकी हड्डियां उनकी कब्रोंमें से निकाल दी जाएंगी, और वे सूर्य और चंद्रमा और स्वर्ग की सारी सेनाओं के सामने फैल जाएंगे, जिनसे उन्होंने प्रेम किया और उनकी सेवा की, जिनके पीछे वे गए, जिनकी उन्होंने खोज की और जिनकी उन्होंने आराधना की, और उन्हें इकट्ठा या दफनाया नहीं जाएगा। वे भूमि पर गोबर के समान हो जायेंगे।

सबसे बुरे अभिशापों में से एक जिसे आप प्राचीन निकट पूर्व में कभी भी अनुभव कर सकते थे, उचित तरीके से दफन न किया जाना था। उनके शवों को कब्रों से बाहर निकाला जाएगा और सितारों, सूरज और चंद्रमा के सामने रखा जाएगा जिनकी वे पूजा करते थे। वे चीजें उनकी रक्षा करने में सक्षम नहीं थीं।

तो, मूर्तिपूजा आपके जीवन जीने की एक मूर्खतापूर्ण रणनीति है। यह आपको उन चीजों को हासिल करने का गलत तरीका सिखाएगा जो जीवन में सबसे महत्वपूर्ण हैं, और यह आपको उन चीजों का उपयोग करने का गलत तरीका सिखाएगा क्योंकि आप हताश हो जाएंगे। वे मूर्तियाँ अंततः वह प्रदान नहीं करेंगी जो आप वास्तव में खोज रहे हैं।

इस्राएल के लोगों के साथ यही हुआ। इसे आज हमारे जीवन के लिए व्यावहारिक और प्रासंगिक बनाते हुए, टिम केलर ने अपनी पुस्तक काउंटरफीट गॉड्स में हमें कई गलत रणनीतियों की याद दिलाई है जिनका उपयोग हम पैसा, सेक्स, शक्ति या इस प्रकार की सभी चीजें हासिल करने के लिए करते हैं। जैसा कि मैं कुछ समय पहले केलर की किताब पढ़ रहा था, यह एक अनुस्मारक है कि जब भी हम जीवन में उन चीजों को प्रदान करने के लिए भगवान के अलावा किसी अन्य चीज़ की ओर देखते हैं जो सबसे अधिक मायने रखती हैं, सुरक्षा और महत्व प्रदान करती हैं, तो हम हताश हो जाते हैं क्योंकि वे मूर्तियाँ हमें नहीं मिलेंगी हमें संतुष्ट करें।

वे नहीं देंगे. तो, केलर अनुमोदन मूर्तिपूजा की बात करते हैं। जीवन का अर्थ केवल तभी है जब मुझे प्यार और सम्मान दिया जा सके।

उपलब्धि मूर्तिपूजा, काम मूर्तिपूजा, धार्मिक मूर्तिपूजा, यहां तक कि स्वयं धर्म, अधार्मिक मूर्तिपूजा, आराम मूर्तिपूजा, पारिवारिक मूर्तिपूजा, संबंध मूर्तिपूजा, जहां मुझे आशीर्वाद देने के लिए ये चीजें होनी चाहिए। यह आपके जीवन जीने की एक गलत रणनीति है। और अंततः, यदि आप उन चीजों को खोज भी लेते हैं, तो अंततः आप पाएंगे कि वे आपको उस तरह से संतुष्ट नहीं कर सकते हैं जिस तरह से भगवान करते हैं।

तो, हम यिर्मयाह के दिनों में यहूदा के लोगों को देखते हैं। हम ऐसे लोगों को देखते हैं जो अपना जीवन जी रहे थे और गलत रणनीति का उपयोग कर रहे थे, सुरक्षा और महत्व के लिए गलत चीजों पर भरोसा कर रहे थे। केलर हमें याद दिलाते हैं, और मैं इसके साथ समाप्त करूंगा, कि जब हम अपने दिल और जीवन की गहरी जरूरतों को पूरा करने के लिए भगवान के अलावा किसी और चीज की ओर रुख करते हैं तो हम वही काम करते हैं।

वह यह कहते हैं, यदि आप अपने जीवन और अपनी पहचान को अपने जीवनसाथी और अपने साथी पर केंद्रित करते हैं, तो आप भावनात्मक रूप से निर्भर, ईर्ष्यालु और नियंत्रित होंगे। दूसरे व्यक्ति की समस्याएँ आप पर भारी पड़ेंगी। यदि आप अपना जीवन और अपनी पहचान अपने परिवार और अपने बच्चों पर केंद्रित करते हैं, तो आप अपना जीवन अपने बच्चों के माध्यम से जीने की कोशिश करेंगे, जब तक कि वे आपसे नाराज़ न हों और उनका अपना कोई अस्तित्व न हो।

सबसे खराब स्थिति में, जब वे आपसे अप्रसन्न होते हैं तो आप उनका दुरुपयोग कर सकते हैं। यदि आप अपने जीवन और अपनी पहचान को अपने काम और अपने करियर पर केन्द्रित करते हैं, तो आप एक प्रेरित काम करने वाले और एक उबाऊ, उथले व्यक्ति होंगे। सबसे बुरी स्थिति में, आप परिवार और दोस्तों को खो देंगे।

और यदि आपका करियर खराब चला, तो आपमें गहरा अवसाद विकसित हो जाएगा। यदि आप अपना जीवन पहचान और धन तथा संपत्ति पर केन्द्रित करते हैं, तो धन के बारे में चिंता या ईर्ष्या आपको खा जाएगी। आप अपनी जीवनशैली को बनाए रखने के लिए अनैतिक काम करने को तैयार होंगे, जो अंततः आपके जीवन को बर्बाद कर देगा।

यदि आप अपने जीवन और अपनी पहचान को आनंद, संतुष्टि और आराम पर केन्द्रित करते हैं, तो आप खुद को किसी चीज़ के आदी होते हुए पाएंगे। आप उन भागने की रणनीतियों से बंधे रहेंगे जिनके द्वारा आप जीवन की कठोरता से बचते हैं। यदि आप अपने जीवन और पहचान को रिश्तों और स्वीकृति पर केन्द्रित करते हैं, तो आप लगातार आलोचना से अत्यधिक आहत होंगे और इस प्रकार हमेशा दोस्तों को खो देंगे।

आप दूसरों से भिड़ने से डरेंगे और इसलिए एक बेकार दोस्त बन जाएँगे। अगर आप अपने जीवन और अपनी पहचान को किसी नेक काम पर केन्द्रित करेंगे, तो आप दुनिया को अच्छे और बुरे में बाँट देंगे और अपने विरोधियों को शैतान बना देंगे। विडंबना यह है कि आप अपने दुश्मनों के नियंत्रण में रहेंगे।

इनके बिना, आपका कोई उद्देश्य नहीं है। यदि आप अपने जीवन और पहचान को धर्म और नैतिकता पर केन्द्रित करते हैं, तो यदि आप अपने नैतिक मानकों पर खरे उतरते हैं, तो आप घमंडी, आत्म-धर्मी और क्रूर होंगे। यदि आप अपने नैतिक मानकों पर खरे नहीं उतरते हैं, तो आपका अपराधबोध पूरी तरह विनाशकारी होगा।

पुराना नियम हमें याद दिलाता है कि जब हम मूर्तियों की पूजा करते हैं, तो हम उनकी तरह बन जाते हैं जिनकी हम पूजा करते हैं। और जो कुछ भी हम अपने जीवन की सबसे गहरी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए प्रभु के अलावा किसी और की ओर मुड़ते हैं, वह कभी भी संतुष्ट नहीं करेगा, कभी भी वह जीवित जल प्रदान नहीं कर पाएगा जो केवल सच्चा परमेश्वर ही कर सकता है।

यह डॉ. गैरी येट्स यिर्मयाह की पुस्तक पर अपनी शिक्षा में कह रहे हैं। यह सत्र 13, यिर्मयाह 8-10 मूर्तिपूजा पर है।